11

व्यवस्था का पूरा होना

(5:17-20)

मसीहा की उम्मीद और अनुमान लगाया जाता था, परन्तु उसने कैसा होना था इसकी समझ लोगों को नहीं थी। उसके निर्भीक, अधिकारात्मक सबकों को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विरोधाभासी या यहां तक कि अपमानजनक भी माना गया। बेशक सच्चाई के आगे कुछ नहीं हो सकता था, जैसा कि यीशु ने इन आयतों में बताया। इस भाग (5:17-20) से पहाड़ी उपदेश के मुख्य भाग का आरम्भ होता है। यह शेष अध्याय की शिक्षा का पूर्वानुमान लगाता है (5:17-7:12)। इस अध्याय की शेष (5:21-48) जहां यीशु ने व्यवस्था की आम तौर पर मानी जाने वाली व्याख्याओं में सुधार किया, जो या तो ऊपर ऊपर से सोचने या गलत धारणा से उपजी।

''लोप करने नहीं'' (5:17)

17''**यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूं।**''

आयत 17. यह न समझो यीशु के नासमझी में सुधार करने के लक्ष्य का संकेत है (देखें 10:34)। यह पौलुस के पत्रों में ''मैं/हम नहीं चाहता/चाहते कि तुम अनजान रहो'' वाक्यांश से मिलता-जुलता है (रोमियों 11:25; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। यीशु ने अपने सुनने वालों को आश्वस्त किया कि वह **व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने** की कोशिश नहीं कर रहा। बाइबल के अंग्रेज़ी शब्दों में व्यवस्था के लिए ''Law'' शब्द को बड़े अक्षरों में लिखने का अर्थ आमतौर पर यह होता है कि अनुवादकों को समझ आया कि इस शब्द का अर्थ मूसा के द्वारा परमेश्वर की ओर से इस्राएल की सन्तान को दी गई आज्ञाएं और नियम हैं।[1] मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की चुनी हुई जाति को दी गई थी न कि अन्यजाति मनुष्यों को। इसमें अब्राहम के सारे वंश, जैसे इश्माइल की सन्तान शामिल नहीं।

इसहाक के द्वारा अब्राहम की सन्तान अर्थात यहूदी होने के कारण यीशु मसीह मूसा की व्यवस्था के अधीन रहा और मरा। व्यवस्था को पूरी तरह से मानने वाला केवल वही एक व्यक्ति था (इब्रानियों 4:15; 5:8, 9)। उसके मन में व्यवस्था के प्रति बहुत स मान था और हमें वह कभी भी इसकी अवमानना करते हुए नहीं मिलता। जहां भी ऐसा लगता है वास्तव में वह विभिन्न यहूदी रब्बियों और विद्वानों द्वारा व्यवस्था के बिगाड़ की निन्दा कर रहा है न कि व्यवस्था की। केवल व्यवस्था को मानना ही इस्राएल की सन्तान को सही नहीं बनाता था; उनके लिए आज्ञाकारी मनों के साथ इसे समर्पित होकर व्यवस्था का आदर करना आवश्यक है (देखें रोमियों 2:13-16, 25-29; 3:20)।

व्यवस्था मनुष्यजाति के पाप में गिरने के कारण जल्दबाजी में दिया गया विकल्प नहीं था। यह छुटकारे की परमेश्वर की योजना का भाग आरम्भ से था। यह इस्राएलियों को एक ईश्वरीय उद्देश्य को पूरा करने के लिए दी गई थी। रोमियों के नाम पौलुस ने कहा कि ''व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है,'' और इसे ''आत्मिक'' भी कहा (रोमियों 7:12, 14)। गलातियों के नाम लिखते हुए उसने कहा कि यह ''मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें'' (गलातियों 3:24)। इसलिए व्यवस्था परमेश्वर के उद्देश्य के विरुद्ध नहीं थी। यह तो यह समझाने के लिए कि लोग अपने आपको नहीं बचा सकते और मसीह तक उन्हें ले जाने के लिए दी गई थी (रोमियों 7:7-11; 8:3, 4; गलातियों 3:22-29)।

परन्तु व्यवस्था कभी भी वास्तविक छुटकारा दिलाने वाली बनने के लिए नहीं दी गई (गलातियों 3:21)। यदि लोग व्यवस्था को पूरी तरह से मान पाते, तो उनका उद्धार इसके द्वारा हो सकता था, परन्तु परमेश्वर को मालूम था कि वे ऐसा नहीं कर पाएंगे। समस्या व्यवस्था की नहीं, बल्कि इसके धार्मिक नियमों के अनुसार जीने की मनुष्य की अयोग्यता या अनिच्छा की थी (रोमियों 7:14-25)।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे लिए वह करने भेजा जो हम अपने आप नहीं कर सकते थे, यानी सिद्धता से व्यवस्था को मानना (देखें 2 कुरिन्थियों 5:21)। वह पाप के लिए हमारा सिद्ध बलिदान बनने के लिए आया (रोमियों 5:12-21; इब्रानियों 10:5-10; 1 पतरस 2:21-25)। न केवल उसने व्यवस्था के अनुसार जीवन बिताया, बल्कि जैसा कि इस वचन में कहा गया है, उसने अपने समय के दूसरे लोगों को भी व्यवस्था को मानने की कोशिश करना सिखाया (19:16-22; लूका 10:25-28)।

इस आयत में यीशु व्यवस्था पर अपनी शिक्षा के विषय में नासमझी को ठीक करने की कोशिश कर रहा था। ग्रन्थियों और फरीसियों का मानना था कि रब्बियों की परम्परा व्यवस्था की तरह ही महत्वपूर्ण है। यीशु ने चाहे खुलकर उन परम्पराओं के विरोध में कहा और उन्हें न मानने की कोशिश न केवल ईमानदारी से नहीं की बल्कि उसे यहूदी अगुओं द्वारा व्यवस्था को मिटाने की कोशिश करने वाले के रूप में दिखाया गया (देखें 15:1-9)। निश्चय ही यह उसकी मंशा नहीं थी। इसके विपरीत वह परमेश्वर की व्यवस्था को इसकी मूल शुद्धता में मानने को बहाल करने का इच्छुक है (19:1-9)।

आया हूं शब्दों के द्वारा यीशु ने अपने आपको चिर प्रतिक्षित मसीहा से मिलाया। ''आने वाला'' मसीह के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति है (देखें भजन संहिता 118:26; मलाकी 3:1; मत्ती 11:2, 3; 21:9; यूहन्ना 4:25)। आम विचार यही था कि मसीहा व्यवस्था का वास्तविक और अन्तिम व्याख्याकार होगा।

यहूदियों ने पुराने नियम को जिस प्रकार से हम इसे बांटते हैं वैसे नहीं बल्कि अलग ढंग से बांटा हुआ था। हम तो इसे चार भागों (व्यवस्था, इतिहास, कविता और भविष्यवाणी) में बांटते हैं, पर इब्रानी बाइबल के केवल तीन भाग (व्यवस्था, भविष्यवक्ता और लेख; देखें लूका 24:44) है। आमतौर पर पूरे पुराने नियम को ''व्यवस्था और भविष्यवक्ता'' कहा जाता था (7:12; 11:13; 22:40; प्रेरितों 13:15; 28:23; रोमियों 3:21)।

''**लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया।**'' यीशु व्यवस्था को ''लोप'' करने या ''नष्ट''

करने को नहीं बल्कि उसे ''पूरा'' करने या ''पूर्ण'' करने आया था। ''लोप'' के लिए इस्तेमाल किए गए उसके यूनानी शब्द का अर्थ ''नष्ट करना,'' ''नकारा करना'' या ''अमान्य'' करना है। ''पूरा करना'' के लिए यूनानी शब्द का अर्थ ''पूरा कर देना,'' ''पूर्ण करना,'' या ''अन्त करना'' है। व्यवस्था को लोप करने के बजाय यीशु ने इसके उद्देश्यों को पूरा करने और फिर क्रूस पर अपनी मृत्यु के समय इसे रास्ते से हटा दिया (रोमियों 10:4; इफिसियों 2:15)। उस समय व्यवस्था ''मर गई,'' जिससे अब इसे मानने की मजबूरी नहीं रही (रोमियों 7:4; गलातियों 3:25; 5:1-4)। अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि उसने इसे सारा ''पूरा कर दिया'' था (लूका 24:44)। व्यवस्था का कोई भाग ऐसा नहीं रहा था जो पूरा न हुआ हो, और उसके विषय में पुराने नियम की कोई भविष्यवाणी ऐसी नहीं रही जो पूरी न हुई हो। आज कोई भी जो इस बात पर ज़ोर देता है कि व्यवस्था या इसके किसी भाग को मानना आवश्यक है वह एक ऐसे प्रबन्ध से जुड़ा है जो अब परमेश्वर की योजना का भाग नहीं है।

''एक मात्रा या एक बिन्दु भी नहीं'' (5:18)

[18]''क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।''

आयत 18. यीशु ने अपने अगले दावे की भूमिका **''क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं''** शब्दों से बनाई। ''सच'' के लिए यूनानी शब्द हमारे शब्द ''आमीन'' का आधार है। यीशु ने अपनी बातों के अन्त के बजाय उनके आरम्भ में इस गम्भीर अभिव्यक्ति का इस्तेमाल निराले ढंग से किया। ''मैं तुम से कहता हूं'' यीशु के अधिकार के साथ परमेश्वर की इच्छा को बताते हुए इस पूरे अध्याय में दोहराया गया है (5:20, 22, 26, 28, 32, 34, 39, 44)। यीशु ने कहा, **''कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।''**[2] ''एक मात्रा'' या ''बिन्दी'' (KJV) यूनानी भाषा में ''एक अयोटा'' है। ''अयोटा'' यूनानी वर्णमाला का सबसे छोटा अक्षर है। इब्रानी भाषा जिसमें मूल में व्यवस्था लिखी गई थी, का सबसे छोटा अक्षर ''योड'' है। ''बिन्दु'' या ''नुक्ता'' (KJV) यूनानी भाषा के शब्द से निकला है जिसका विशेष अर्थ ''सींग'' है। यह एक इब्रानी अक्षर के ऊपर एक छोटा सा चिह्न है, जो इसे किसी दूसरे शब्द से अलग करता है। अंग्रेज़ी भाषा में हम इसे उसी सिद्धांत को समझाने के लिए कहेंगे '' 'i' के ऊपर बिन्दी डालना और 't' को काटना।'' बिना अपवाद के हर भविष्यवाणी, प्रतीक और प्रतिज्ञा का पूरा होना आवश्यक था। जब तक क्रूस पर मसीह के द्वारा उसे पूरा न कर दिया जाता तब तक व्यवस्था लागू थी और उस समय के यहूदी लोगों को इसके हर भाग को मानना मजबूरी थी।

अब हम एक नई व्यवस्था अर्थात ''मसीह की व्यवस्था'' के अधीन रहते हैं (गलातियों 6:2)। परमेश्वर हम से अपनी पुरानी व्यवस्था के अनुसार रहने को नहीं कहता है। हमें इसमें पाए जाने वाले नियमों को मानना आवश्यक है जिन्हें यीशु मसीह के नये नियम में मिला दिया गया है; परन्तु हम उन्हें इसलिए मानते हैं क्योंकि वे नई वाचा में हैं, न कि इसलिए कि वे पुरानी वाचा में पाए जाते हैं। पौलुस ने लिखा, ''परन्तु अब व्यवस्था से अलग परमेश्वर की वह

धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यवक्ता देते हैं, अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है। ...'' (रोमियों 3:21, 22)। सुसमाचार के चारों विवरणों में 120 से अधिक बार यीशु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं'' (KJV)। उसने घोषणा की, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता उसको दोषी ठहराने वाला एक ही है: अर्थात जो वचन मैंने कहा वही पिछले दिनों में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। उसने यह भी कहा ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (24:35)।

''इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से'' एक भी नहीं (5:19)

19''इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।''

आयत 19. शास्त्रियों और फरीसियों ने व्यवस्था को बड़े और छोटे भागों में बांटा हुआ था जिसमें कुछ नियमों को दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण बताया जाता था। जैक पी. लूईस ने दोनों की तुलना इस प्रकार से की है:

> रब्बियों ने व्यवस्था में 613 आज्ञाएं गिनी थीं और माता पिता का आदर करने की आज्ञा को (निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16) भारी आज्ञा के रूप में, जबकि पक्षियों के घोसलों से सम्बन्धित व्यवस्थाविवरण 22:6 की आज्ञा को सबसे हल्की बताया था। परन्तु, किसी भी आज्ञा की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए थी।[3]

मिशनाह में कहा गया है:

> छोटे से छोटे धार्मिक कर्त्तव्य में बड़े कर्त्तव्य की तरह ही चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि विभिन्न धार्मिक कर्त्तव्यों में से किसका कैसा प्रतिफल मिलने वाला है। सबसे छोटे धार्मिक कर्त्तव्य का ऐसा पीछा करो जैसा सबसे महत्वपूर्ण कर्त्तव्य था, और अपराध से भागो। क्योंकि एक धार्मिक कर्त्तव्य करने से दूसरा धार्मिक कर्त्तव्य करने के लिए रास्ता खुलता है।[4]

क्या यीशु **इन छोटी से छोटी आज्ञाओं** जैसे व्याक्यांश का इस्तेमाल करते हुए समझौतावादी भाषा का इस्तेमाल कर रहा था? शास्त्री और फरीसी लोग कुछ नियमों को दूसरे नियमों से अधिक मानते थे, तो क्या वह यह कह रहा था कि वे नियम भी *जिन्हें* वे दूसरों से ''छोटा'' मानते हैं नज़रअन्दाज़ नहीं किए जाते? सम्भवतया नहीं। याद रखा जाना चाहिए कि यीशु ने स्वयं सबसे बड़ी आज्ञा (''प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम रख'' के साथ साथ) दूसरी आज्ञा (''अपने पड़ोसी के साथ अपने समान प्रेम रख'') बताई (22:34-40)। उसने यह भी कहा कि शास्त्रियों और फरीसी हल्की आज्ञा (पुदीने, सौंफ और जीरे का दसवां अंश देने) पर ज़ोर देते थे जबकि भारी आज्ञा (न्याय, दया और विश्वास) को नज़रअन्दाज़ कर रहे थे। यीशु ने घोषणा की कि दोनों तरह की आज्ञाओं को माना जाना चाहिए (23:23) ।

उसकी शिक्षा की कि वे **स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटे** कहलाएंगे का अर्थ यह नहीं है कि मूसा की व्यवस्था को न मानने वाले मसीही लोग गलत थे। इसके विपरीत वह परमेश्वर की आज्ञा मानने के महत्व पर ज़ोर देने से मेल खाती का इस्तेमाल कर रहा। यीशु की बात को व्यवस्था के उसके पूरा करने की रोशनी में समझा जाना चाहिए। पवित्र शास्त्र की आज्ञा मानने का अर्थ मसीह की व्यवस्था की आज्ञा मानना है।

''यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो'' (5:20)

20''**क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।**''

आयत 20. तेजी से आगे बढ़ते हुए यीशु ने कहा, ''**क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।**'' उसका ज़ोर बेशक यह था कि उसके चेलों को ''राज्य में प्रवेश करने के नियमों को केवल दिखाने के लिए मानने से आगे बढ़ना'' आवश्यक था।[5] ''शास्त्रियों और फरीसियों'' की धार्मिकता उन्हें अपने धर्म के बाहरी संस्कारों और रीतियों को मानने के साथ साथ अपने मनों में दुष्ट भावनाओं को जमा करने की अनुमति देती है। यह परमेश्वर की व्यवस्था का बेतुका बिगाड़ था। यीशु के चेलों को यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वे विभिन्न बाहरी रीतियों को मान रहे हैं इसलिए उन्हें अपने मनों के विचारों की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने बाद में शास्त्रियों और फरीसियों को बताया कि उनके लिए कटोरे या थाली को बाहर से मांजने का कोई फायदा नहीं यदि वह अन्दर से गन्दा रह जाए (23:26)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

यीशु और व्यवस्था (5:17-20)

यीशु मूसा की व्यवस्था को ''नष्ट'' करने नहीं बल्कि इसे ''पूरा'' करने के लिए आया था। वह व्यवस्था की उस शान को बहाल करने के लिए आया जिसे यहूदियों ने अपनी विभिन्न व्याख्याओं, मिलावट उसमें जोड़ने और उसमें से निकालने के द्वारा उससे छीन ली। उसकी टिप्पणियों से यह स्पष्ट है कि वह नये युग अर्थात मसीही युग के लिए वाचा ही बनाने वाला था। यीशु ने नई वाचा के भीतर ही कई अनन्त नियम जोड़ दिए जो परमेश्वर ने पिछले दो युगों के दौरान दिए थे। हमें इन्हें मानना आवश्यक है क्योंकि उसने हमें दिया, न कि इस कारण कि वे पुरानी वाचा का भाग थे (देखें इब्रानियों 8:7-13)।

टिप्पणियां

[1]परन्तु यह तय करते हुए संदर्भ को हमेशा ध्यान में रखा जाए। [2]देखें लूका 16:17. रब्बियों के लेखों में ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल हुआ। *एक्सोडस रब्बाह* 6.1 में कहा गया है, ''व्यवस्था में से एक नुक्ता भी कभी नहीं मिटाया जाएगा।'' [3]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 87. [4]मिशनाह *अबथ* 2.1; 4.2. [5]लूईस, 88.